भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका : लोकतन्त्र के बदलते स्वरूप का अध्ययन

भूमिका:–

नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी प्रत्येक लोकतान्त्रिक राजनीतिक व्यवस्था का एक बुनियादी घटक है। यह विभिन्न प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों में व्यक्तियों की भागीदारी है जिन्हें सरकारी निर्णय लेने और कार्यों को प्रभावित करने के लिए तैयार किया गया है। इसमें मतदान, राजनीतिक दल की गतिविधियों में भागदारी, विधायकों को शिकायतों का संचार इत्यादि जैसी गतिविधियां शामिल है। महिलाएं कुल आबादी का लगभग आधा हिस्सा है। इसलिए उनकी राजनीतिक भागीदारी उतनी ही महत्वपूर्ण और आवश्यक है जितनी कि लोकतन्त्र के विकास और राष्ट्र निर्माण में पुरूषों की। लेकिन दुनियाभर में महिलाओं को हाशिए पर रखा जाता है और महिलओां के लिए सबसे महत्वपूर्ण हाशिए के क्षेत्रों में से एक राजनीति है। भारत में महिलाओं की स्थिति हमेशा एक समान नहीं रही है। इसमें समय–समय पर हमेशा बदलाव होता रहा है। यदि हम महिलाओं की स्थिति का आकलन करें तो पता चलेगा कि वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक महिलाओं की सामाजिक स्थिति में अनेक तरह के उतार–चढ़ाव आते रहे है और उसके अनुसार ही उनके अधिकारों में बदलाव भी होता रहा है। इन बदलावों का ही परिणाम है कि महिलाओं का योगदान भारतीय राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में दिनों–दिन बढ़ रहा है जो कि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए एक सफल प्रयास है।

राजनीति में महिलाओं की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में स्त्री के बतौर शासक होने के प्रमाण हमें क्षेत्रीय सत्ताओं में ही मिलते हैं लेकिन केन्द्रीय सत्ता में पहली दमदार उपस्थिति हमें गुलाम वंश की शासिका रजिया सुल्तान में मिलती है जिसे उसके पिता इल्तुतमिशन ने योग्य पुरूष उत्तराधिकारी नहीं मिलने के कारण राजगद्दी सौंप दी थी। रजिया के बाद सदियों तक भारत का केन्द्रीय शासन किसी महिला को नहीं मिला और न ही उसे कोई उच्च पद प्रदान किया गया। कुछ महिलाओं जैसे कि अकबर की धाय माँ माहम अनगा, जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ और शाहजहाँ की दो बेटियों जहाँआरा और रोशनआरा आदि का राजनीतिक दबदबा अवश्य रहा लेकिन उनके पास कोई शासकीय पद नहीं था और वे पुत्र, पत्नी ओर पुत्री की परिस्थितियों के

कारण राजनीति में सक्रिय रहीं। ब्रिटिश काल में सन् 1917 में महिलाओं के एक प्रतिनिधिमण्डल ने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की मांग के लिए भारत विषयक सचिव से मुलाकात की जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन हासिल था। इनके अतिरिक्त आजादी की लड़ाई में सक्रिय कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता भारतीय महिलाओं सरोजिनी नायडु (1925) और नेल्ली सेन गुप्ता (1933) ने की। जब भारत के संविधान का निर्माण करने के लिए संविधान सभा का गठन किया गया था तब उसमें 389 सदस्य थे जिनमें से केवल 15 महिलाएं सदस्य थी जिनका भी संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण योदान रहा था जिनमें अम्मू स्वामीनाथन, दुर्गाबाई देशमुख, हंसा जिवराज मेहता, कमला चौधरी, लीला रॉय, पूर्णिमा बनर्जी, मालती चौधरी, राजकुमारी अमृत कौर, रेनुका रे, सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, विजया लक्ष्मी पंडित इत्यादि जैसी महिलएं शामिल थी।

भारत में स्वतन्त्रता के बाद पहली केन्द्र सरकार (जवाहरलाल नेहरू की सरकार में) के पास 20 कैबिनेट मंत्रालयों में केवल एक महिला राजकुमारी अमृत कौर थी, जिन्हें स्वास्थ्य मंत्रालय का प्रभार दिया गया था। एक भी महिला को लाल बहादुर शास्त्री की सरकार में जगह नहीं दी गई। इसके पश्चात् भारतीय राजनीति में इंदिरा गांधी का बड़ा नाम है जिन्होंने देश की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में देश के लोगों पर गहरी छाप छोड़ी। इंदिरा गांधी की 5वीं, 6वीं, 9वीं कैबिनेट में एक भी महिला केन्द्रीय मंत्री नहीं थी। राजीव गांधी के मंत्रिमण्डल में केवल एक महिला मोहसिना किदवई को शामिल किया गया था।

इंदिरा गांधी के बाद महिलाओं का एक तबका राजनीति में सक्रिय हो गया। आज देश के पास महिला मुख्यमंत्रियों की लम्बी सूची है ओर उनमें से कई ने कई बार प्रदेश की बागडोर भी संभाली है जैसे कि जयललिता ने तमिलनायडू की मुख्यमंत्री के रूप में, वसुंधरा राजे ने राजस्थान की मुख्य मंत्री के रूप में ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में। देश की पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिमा देवी सिंह पाटिल सन् 2007 में बनीं। 2014 और 2019 के लोक सभा चुनावों के पश्चात् मोदी सरकार में भी महिलओां का योगदान रहा है। 2014 में मोदी सरकार में 9 महिला सांसदों को कैबिनेट और राज्य मंत्री बनाया गया था। इसी प्रकार 2019 में मोदी सरकार में 9 महिला सांसदों को कैबिनेट और राज्य मंत्री बनाया गया था। लोकसभा अध्यक्ष के पद पर पहली महिला मीरा कुमार थी और उनके बाद सुमित्रा महाजन दूसरी महिला लोकसभा अध्यक्ष बनी थी। 1952 से 2019 तक लोकसभा में महिलाओं की स्थिति

लोकसभा	सीटों की कुल संख्या	महिला सदस्य जो जीती	कुल का प्रतिशत
पहली (1952)	489	22	4.4
दूसरी (1957)	494	27	5.4
तीसरी (1962)	494	34	6.7
चौथी (1967)	523	31	5.9
पांचवीं (1971)	521	22	4.2
छठी (1977)	544	19	3.4
सातवीं (1980)	544	28	5.1
आठवीं (1984)	544	44	8.1
नौंवी (1989)	529	28	5.3
दसवीं (1991)	509	36	7.0
ग्यारहवीं (1996)	541	40	7.4
बारहवीं (1998)	545	44	8.0
तेरहवीं (1999)	543	48	8.8
चौदहवीं (2004)	543	45	8.1
पद्रहवी (2009)	543	59	10.9
सोलहवीं (2014)	543	61	11.2
सत्तरहवीं (2019)	542	78	14.39

अतः भारत में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान समय में भी भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका बढ़ रही है। सरकार तथा समाज ने भी काफी हद तक महिलाओं की राजनीति में समान भागदारी की दिशा में ठोस कदम उठाये है।

समस्या का ब्यान :–

वैसे तो भारतीय राजनीति में महिलाओं की अहम भूमिका रही है। लेकिन राजनीति में महिलाओं की भूमिका का दूसरा पहलू भी है। भारतीय महिलाओं द्वारा इतनी उच्च उपलब्धियों को हासिल करने के बाद भी महिलाओं का शासन एवं नीति – निर्माण प्रक्रिया में बहुत कम योगदान रहता है। उन्हें महत्वपूर्ण राजनीतिक फैसलों से दूर रखा जात है। महिलाओं के पद पर आसीन होने के बावजूद उनके राजनीतिक फँसलों के पीछे उनके पिता, पुत्र या पति की बड़ी भूमिका होती है। भारतीय संविधान के 73वें और 74वें संशोधन के माध्यम से महिलाओं को स्थानीय निकायों में आरक्षण दिया गया है। कई राज्यों में यह सीमा अभी भी 33 प्रतिशत रखी गई है जबकि उनकी आबादी लगभग 50 प्रतिशत है। बिहार सहित कुछ राज्यों ने इस आरक्षण की सीमा को 50 प्रतिशत रखा है।.

पहली लोकसभा (1952) के लिए हुए चुनावों में महिलाओं सांसदों की संख्या सदन की कुल सदस्य संख्या का 4.4 प्रतिशत थी जो 2014 में बढ़कर करीब 11 प्रतिशत हो गई। अब तक के सभी लोकसभा चुनाव परिणामों पर गौर करें तो महिला सदस्यों की संख्या सदन की कुल सदस्य संख्या के 3.4 प्रतिशत से 11.2 प्रतिशत के बीच रही है। पहले आम चुनाव के बाद गठित पहली लोकसभा से लेकर 17वीं लोकसभा तक महिला सांसदों की संख्या 19 से 78 के बीच रही है।

हालांकि भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका बढ़ रही है लेकिन उपरोक्त आंकड़ों के अनुसार महिलओां का भारतीय राजनीति में योगदान पुरूषों की तुलना में बहुत कम है। अतः वर्तमान अध्ययन की मुख्य समस्या यह है कि भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका कहां तक है। यदि उनकी राजनीति में भूमिका कम है तो इस स्थिति के कारणों का पता लगाने के लिए ही मैं "भारतीय राजनीति में महिलओं की भूमिका : लोकतन्त्र के बदलते स्वरूप का अध्ययन" विषय पर शोध कर रही हूँ।

शोध उद्देश्य :–

1. भारतीय राजनीति में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया गया है।
2. भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका या भागदारी पर चर्चा की गई है।
3. भारतीय राजनीति में महिलआां को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

परिकल्पना :–

1. भारतीय राजनीति में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
2. भारतीय राजनीति में महिलाओं के प्रभाव में वृद्धि होती रही है।
3. वर्तमान में सरकार ने महिलओं को राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है।

अध्ययन पद्धति :–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन हेतु राजनीतिक दृष्टिकोण का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का समावेश किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली एवं अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन डायरी, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्र एवं विभिन्न वेबसाइट एवं पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

साहित्य की समीक्षा :–

साहित्य की समीक्षा में विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए विभिन्न अध्ययनों और वर्तमान प्रश्न से सम्बन्धित उनके शोध निष्कर्षों का अवलोकन शामिल है। "भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका : लोकतन्त्र के बदलते स्वरूप का अध्ययन" पर साहित्य का एक विशाल समूह है जिसमें अध्ययन के बारे में सबके तर्क अलग–अलग है। निम्न विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रकट किये है जो इस प्रकार से है:–

सुशीला कौशिक ने अपनी संपादित पुस्तक, "विमेन्स पार्टिसिपेशन इन पॉलिटिक्स (1993)" में यह विचार दिया है कि राजनीति में और निर्णय लेने के स्तर पर महिलाओं की पर्याप्त भागदारी की कमी, उनकी खराब सामाजिक और घरेलू स्थिति की शाखा के रूप में और महत्वपूर्ण पदों से उनका बहिष्कार और शक्ति के स्तर पर। इसलिए भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के किसी भी विश्लेषण के लिए कुछ घटकों को जोड़ना होगा जैसे (अ) भारत की राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भागदारी की सीमा, स्तर और प्रकृति, दोनों औपचारिक और गैर–औपचारिक संस्थानों के माध्यम से (ब) महिलाओं के अधिकारों और रहने की

स्थिति के लिए इस तरह की भागीदारी का प्रभाव और महत्व (ख) इस भागीदारी के दौरान उठाए गए नारीवादी मुद्दों के प्रकार

"राजनीति में महिलाएं (1990)" में सुमन पांडे ने कुछ ऐसे तरीके अपनाए हैं जो भागीदारी की विशेषता रखते हैं और बताया कि राजनीतिक भागीदारी की दर को देखने के लिए मतदान सबसे महत्वपूर्ण तरीका है।

रंजना कुमारी ने अपनी संपादित पुस्तक, "वूमेन इन पॉलिटिक्स (1990)" में उल्लेख किया है कि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं के अनुपात में गिरावट और कार्य प्रक्रिया से उनके बढ़ते हाशिए पर कई तरह से उत्पीड़न बढ़ा है। 1990 में, राष्ट्रीय महिला आयोग के निर्माण के लिए उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं को अपनी आवाज सुनने और महिलाओं के मुद्दों को अधिक दृश्यता देने के लिए एक मंच या एक मंच बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। एक सजातीय निकाय के रूप में एक साथ आने के लिए, महिलाओं को न केवल महिलाओं पर कुछ अध्ययनों और शोध परियोजनाओं के निष्कर्षों और रिपोर्टों के बारे में जानने की जरूरत है बल्कि जमीन पर महिलाओं की समस्याओं की वास्तविकताओं के बारे में भी जानने की जरूरत है।

"भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाएं (1985)", में मनमोहन कौर भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की भूमिका में महिलाओं की भागीदारी पर चर्चा करती है। महिलाओं ने भारत में स्वतन्त्रता संग्राम और सामाजिक और राजनीतिक सुधारों में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

एक समाजशास्त्री, चन्द्रलेखा हेट, "महिलाओं की बदलती स्थिति (1969)" के अनुसार, आधुनिक समय में व्यक्ति सामाजिक क्रिया की एक इकाई के रूप में समूह को तेजी से स्थान दे रहा है। लगातार बढ़ते हुए राज्य नियन्त्रण और गतिविधि के प्रभाव में महिलाओं के पास एक साथ आने और एक संयुक्त गैर–पार्टी राजनीतिक मोर्चा विकसित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। रमेश चन्द्र मिश्रा ने भारत में महिलाओं की भूमिका (2000) नामक पुस्तक में निर्णय लेने में राजनीतिक महिलाओं और महिलाओं के निर्माण का एक अनुभवजन्य अध्ययन किया। अध्ययन में महिला विधायकों की सामाजिक – आर्थिक जड़ें उनका राजनीतिक समाजीकरण, प्रेरणा, राजनीतिक उत्थान, राजनीति के प्रति उनकी धारणा और विधायिका में उनकी भूमिका को शामिल किया गया है। लोक ने अपने अध्ययन का समापन इस ओर इशारा करते हुए किया है कि विधायिका में

महिलाओं का अधिक प्रतिनिधित्व होना चाहिए, उनकी भर्ती का आधार व्यापक होना चाहिए और अन्त में विधायिका में उनकी भूमिका का प्रदर्शन अधिक प्रभावी होना चाहिए।

भारत में महिलाओं की स्थिति पर अध्ययन आधुनिक भारत में महिलाएं (1957) में नीरा देसाई द्वारा किया गया है। टी. ए. बेग (सं.) ने भारत की महिला (1958) ओर भारत की महिला शक्ति (1976) में, ए. एस. अल्टेकर ने हिन्दू सभ्यता में महिलाओं की स्थिति (1962) में, द. ए. देसूजा (सं.) ने वूमेन इन कंटेम्परारी इंडिया (1975), देवकी जैन ने इन इंडियन वूमैन (1975) 'ये और इसी तरह के कई अन्य अध्ययन है जो भारत में महिलाओं की स्थिति पर एक बुनियादी और शोध आधारित जानकारी प्रदान करते है। नीरा देसाई ने अपनी पुस्तक वूमेन इन मौडर्न इंडिया (1975) में ऐतिहासक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की स्थिति में बदलाव को चित्रित किया है। उन्होंने पूर्व–ब्रिटिश युग में अपनी स्थिति दिखाई है और स्वतन्त्रता के बाद के भारत के दौरान महिलाओं की स्थिति के परिवर्तन के इतिहास पर भी जोर दिया है। उन्होंने स्वतन्त्रता के बाद भारत में महिलाओं की बदलती हुई स्थिति के सम्बन्ध में ऐतिहासिक और सामाजिक तथ्यों के सर्वेक्षण के माध्यम से हमें एक बहुत ही व्यवस्थित प्रस्तुति दी है।

डी. सुन्दर राम ने अपनी संपादित पुस्तक "वूमेन एमपावरमेन्ट इन पॉलिटिकल इन्सटीटयूशनस : एन इंडियन परसपेक्टिव (2009)" में महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी, स्थानीय शासन में महिलाओं का योगदान, लोकसभा एवं राज्यसभा तथा पंचायती राज में महिलाओं के लिए आरक्षण के बारे में चर्चा की है।

ए.के. गुप्ता ने अपनी पुस्तक "एमपावरिंग वूमेन (2002)" में राजनीति में महिलाओं की स्थिति, महिला सशक्तिकरण आन्दोलन, राजनीतिक दलों में महिलओां की भूमिका, महिलाओं के लिए राजनीतिक दलों में महिलाओं की भूमिका, महिलाओं के लिए राजनीतिक समानता इत्यादि विषयों पर चर्चा की है। इसके अलावा संविधान में राज्य के नीति निर्देषक सिद्धान्तों में महिलाओं और पुरूषों को समान वेतन और समान काम देने के बारे में भी वर्णन किया है।

बी.आर. नंदा अपनी पुस्तक "भारतीय महिलाएं, पर्दा से आधुनिकता तक (1976)" में राजनीतिक भागदारी की ओर महिलाओं की धीमी गति की ऐतिहासिक तस्वीर प्रदान करता है। इस पुस्तक में स्वतन्त्रता आन्दोलन से लेकर आज तक की महिलाओं की स्थिति पर नौ लेखो का संकलन है।

प्रस्तावित अध्ययन योजना:-

प्रथम अध्याय	प्रस्तावना
द्वितीय अध्याय	ऐतिहासिक सन्दर्भ में महिलाओं की भूमिका : प्राचीन समय से 1947
तृतीय अध्याय	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका
चतुर्थ अध्याय	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में समस्याएं और उनका समाधान
पंचम अध्याय	भावी अनुसंधान हेतू निष्कर्ष
	संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- शर्मा, प्रज्ञा (2011), "वुमन इन इंडियन सोसाइटी", जयपुर : पांइटर पब्लिशर्स
- गुप्ता, कमलेश कुमार (2006), "महिला सशक्तिकरण सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति", नई दिल्ली : बुक एन्कलेव
- आप्टे, जे. एस (1995), "एजुकेशन एण्ड वूमन्स इम्पावरमेन्ट" इण्डिया जर्नल और अडल्ट एजूकेशन, वाल्यूम 56, जुलाई–सितम्बर
- धावन, डॉ. हरिमोहन (2002), "महिला सशक्तिकरण : विविध आयाम", उज्जैन : मध्यप्रदेश दलित साहित्य अकादमी।
- गुप्ता, ए.के. (2002), "एम्पाबरिंग वूमेन", चंडीगढ़ : अभिषेक पब्लिकेशन्स
- व्होरा आशारानी (1983), "भारतीय नारी : दशा और दिशा", दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
- सिंह राजबाला, सिंह मधुबाला (2006), "भारत में महिलाएं" जयपुर : आविष्कार पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
- शर्मा, प्रज्ञा (2011), "महिला विकास और सशक्तिकरण" जयपुर : आविष्कार पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

- गोयल, सुनील (2003), ''भारतीय समाज में नारी'', जयपुरः आर.बी.एम.ए. पब्लिकेशन
- करात, वंदा (2008), ''भारतीय नारी : संघर्ष और मुक्ति'', दिल्ली : नाईस प्रिंटिंग प्रेस
- कुमावत, ललित (2004), ''पंचायती राज एवं वंचित महिला समूह का उभारता नेतृत्व'', नई दिल्ली : क्लासिकल पब्लिशिंग
- मेहता, चेतन (1996), ''महिला एवं कानून'', नई दिल्ली : आशीष पब्लिशिंग हाऊस
- धवन, हरिमोहन (1998), ''महिला सशक्तीकरण'', आगरा : रावत पब्लिकेशन
- श्रीवास्तव, सुधार रानी (1999), ''भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति'', नई दिल्ली : कॉमन वेल्थ पब्लिकेशन
- सिन्हा, निरोज (2000), ''वूमैन इन इण्डियन पॉलिटिक्स'' दिल्ली : ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस
- गोस्वामी, बी. (2016), ''इण्डियन वूमेन इन पॉलिटिक्स'', दिल्ली : अभिषेक पब्लिकेशन